|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 14. April 2024 | | |
| **3. Sonntag der Osterzeit B** | | |
| Erste Lesung: Apg 3,12a.13-15.17-19; Zweite Lesung: 1 Joh 2,1-5a; Evangelium: Lk 24,35-48 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 328, 1+5-7 | Gelobt sei Gott |
|  | GL 326, 1+2+4 | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  | GL 754 | Halleluja, lasst uns singen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 5 | Herr Jesus, auferstanden |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre, dir Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 4,2.4 u. 7-9 |  |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 46, 1 | Lass dein Angesicht |
|  | GL 644, 3 | Auferstanden ist der Herr |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 324, 1-3 | Vom Tode heut erstanden ist |
|  | GL 329, 1+3 | Das ist der Tag, den Gott gemacht |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Herr Jesus, erschließ uns die Schrift!* | |
|  | *Lass unser Herz entbrennen, wenn du zu uns redest.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 177 | Credo in unum Deum |
|  | GL 759 | Der Glaube ist nun fest verbürgt |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 325, 1-3 | Bleibe bei uns |
|  | GL 710, 1-3 | Unser Leben sei ein Fest |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 762 | Verklärter Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 758 | Lobsing, erlöste Christenschar |
|  | GL 763 | Sei Siegesfürst, gebenedeit |
|  | GL 752, 3! | Dir danken nun |
|  | GL 755, 3! | Halleluja! Auferstanden |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 525, 1-4 | Freu dich, du Himmelskönigin |
|  | GL 533, 1+2 | Lasst uns erfreuen herzlich sehr |
|  |  |  |